आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023
Received: 15/12/2023; Accepted: 16/12/2023; Published: 26/12/2023

स्त्री विमर्श-एक अवलोकन

- **श्री कुपेन्द्र आर राठोड़**
सहायक प्राध्यापक एवं शोध छात्र
सरकारी प्रथम श्रेणी महाविद्यालय हुलसूर,
बिदर.
कर्नाटक-585416.
9902396416

श्री कुपेन्द्र आर राठोड़, **स्त्री विमर्श-एक अवलोकन**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023,(524-527)

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवतः'जंहा नारी रहती है वंहा भगवान निवास करता है'-1 आज हमारे समाज में इसकी विपरीत परिस्थिति है। भारतीय समाज में स्त्रियों कों देवता के प्रतिरूप मानाजाता है।कहा जाता है नारी लक्ष्मी है नारी सरस्वती है नारी दुर्गा है। यथार्थ में तो नारी सर्वव्यापी है।हमारा समाज एक तरफ नारी की पूजा करता है तो दूसरि तरफ उनके अस्तित्व एवं चरित्र पर प्रश्न चिन्ह लगाता है। पुरुषप्रधान समाज ने नारी कों चारों तरफ से बांध दिया है।वह उस बंधन से बाहर निकलने के लिए चटपटा रही है। जैसे जल के बाहर आने से मछलिया तड़पती है। इतिहास गवाह है की प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक कालतक हमारे देश की महिलाओं स्थिति दर्दनाक रही है। पुरुषप्रधान समाज ने नारी कों व्यक्ति से वस्तु बनाया । समाज के सभी सुविधाओं से वंचित किया। मानव की एक जन्मजात प्रवर्ती रही है की वह सदा कमजोरों पर अधिकार चालाया है। वेद.पुराण.रामायण. और महावभारत भी साक्षी रहे है।रामायण में एक तरफ सीता कों देवी के रूप में पूजा जाता है तो दूसरि तरफ उसी सीता पर संदेह करते हुये अग्नि परीक्षा देने कों कहा जाता है।हमारे पवित्र महाकाव्यों में भी महिलाओं लेकर एक द्वन्द्व नीति बनी हुई है।

प्राचीन वैदिक काल में महिलाओ कों आदर के साथ देखा जाता था। मैत्री.गार्गी जैसे विद्वत महिलाएँ उस काल में थी। उसके बाद जैसे देश में आर्यों का आगमन हुआ तब से महिलाओं कों एक सीमित वर्ग में रखने का काम शुरू हुआ। ।मध्यकालीन भारतीय समाज में स्त्रियों स्थिति बहुत नाजुक थी। वह अपने अधिकारों से वंचित और उपेक्षित भी थी।।क्यों की उस वक्त हिंदु और मुस्लिम समाज में पित्रसत्तात्मक प्रभुत्व था। हिंदु और मुस्लिम राजाओं के राजसत्ता के संघर्षों में दोनों समाज की महिलाएँ पिसती रही। आधुनिक युग आते –आते महिलाओं की स्थिति और चिंताजनक हो गई थी। बहुत सारे सामाजिक प्रथाएँ हमारे समाज में पैदा हो गए थे।जैसे सती

प्रथा.देवदासी प्रथा.बाल प्रथा.पर्दा प्रथा.विधवा पुनर्विवाह पर निषेध आदि । हमारे देश के महान नेताओं के निरंतर आंदोलन एवं प्रयास के बदोलत कई प्रथाएँ पर रोक लग गई।कई प्रथाएँ आज भी समाज में जीवित है।सुशिक्षित समाज इसका विरोध करता है। किसी भी समाज के सुसंक्रत होने की पहचान नारी से ही होती है। जब-जब नारी को गौरवमय स्थान दिया गया है वह समाज प्रगति के राह पर चला है।जिस समाज मे महिलाओं को ज्यादा सुविधा एवं मौका दिया है उस समाज के लिए महिलाएँ अपना भरपूर योगदान दिया है।

21 वी सदी महिलाओं के लिए हर चुनौतियों से भरी हुई है। स्त्री इन सभी चुनौतियों कों लांघती हुई जा रही है।रास्ता कठिन होते हुये भी संभव है की एक दिन वह अपने लक्ष तक जरूर पंहुच ही जाएगी। जीवन के बदले हुए रूप कों अपनाती हुई आज की लेखिकाएँ नए उमंग के साथ नए जोश के साथ अपना सुरक्षा कवच कों तोड़कर आगे बड रही है। जिनमे सुधा आरोड़ा.सविता सिंह.अनामिका.कात्यायनी.इन्दु जैन.पुष्पा भारती.कुसुम अंसल.सुशिला टाकभौरे.प्रभा खेतान.निर्मला गर्ग. ममता कालिया.मन्नू भण्डारी सुमन राजे गीतांजली श्री आदि प्रमुख है। आजमहिलाएँ संगीत.खेल.कला.साहितय.विज्ञान.तंत्रज्ञान.संगीत.औद्योगिक.सेना.अंतरिक्ष मेडिकल आदि समाज हर क्षेत्र और दुनिया के हर देशों में अपनी काबिलियत दिखाया है।

पुरुष और महिलाएँ एक सिक्के के दो पहलू है फिर भी यह क्या कारण रहा होगा विकास के हर क्षेत्र में पुरुष आगे चल गया और महिलाएँ एक कदम पीछे रह गई है। पुरुषप्रधान समाज ने महिलाओं कों एक व्यक्ति न मानकर वस्तु के रूप में देखने लगा।पुरुष को अपने अस्तित्व कों भी बचाने का भी चिंता है।उन्होने महिला कों अपने मन एवं काम के मुताबिक उपयोग किया है। वास्तव में घर की एक पढ़ी-लिखी महिला सौ शिक्षकों के समान होती है।प्रसिद्द हिन्दी महिला साहित्यकार चित्रा म्रदुगल कहती है' महिलाओं को घर का घुटन नहीं बाहरी ताजा हवा चाहिए'-2 स्त्री को मुख्य रूप से स्त्रि केंद्र बनाकर बहतसारे साहित्यकारों ने अपनी कलम की जादू से महिलाओं के समस्याओं पर प्रकाश डाला है। उनमे प्रमुख रूप से मुंशी प्रेमचंद का नाम आता है।प्रेमचंद ने अपने उपन्यास एवं कहानियों के जरिए स्त्री सुधार पर ज़ोर दिया है।उनके निर्मला.प्रतिज्ञा.सेवासदन.गबन उपन्यासों में स्त्रियों के अलग-अलग समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है।इसके अलावा म्रणाल पांडेय की 'लड़कियाँ' कहानी अर्चना वर्मा की 'जोकर' क्रष्ण सोबती की 'सूरजमुखी अंधेरे के' ममता कालिया की 'यंहा रोना मना है' और 'बोलने वाली औरत' कहानी सुधा आरोडा की 'काली लड़की का करतब' नासिरा शर्मा की 'बिलाव' मैत्रेयी पुष्प की 'गोमा हँसती है' सुशीला टाकभौरे की 'सिलिया' गीतांजली श्री की 'अनुगूँज' कहानियाँ स्त्री त्रासदी का जिंदा चित्रण है।

समाज में आधी आबादी महिलाओं की है।फिर भी महिलाएँ अबला है कमजोर है। हिन्दी साहित्य में आज स्त्री जीवन के बारे में विविध आयाम पर अध्ययन करना बहुत महत्व है।पुरुष जैसे आजाद है क्यों महिलाओं की आजादी पर अक्सर लोग टिप्पणी करते है। क्या 21 वी सदी में भी हमारे बहन.माँ.पत्नी बेटी.और सहेलियों कों आजादी नहीं होने चाहिए।महात्मा गांधीजी के वे शब्द मुझे आज भी याद है 'जब हमारी देश बेटी और बहाने रात के बारह बजे भी दिन की तरह जीवन यापन करेगी. निर्भीक रूप से जिएगी उसे ही मै महिलाओं की असली

आजादी मानता हूँ'-3 क्यों पुरुष प्रधान समाज ने महिलाओं की आजादी पर प्रश्न चिन्ह उठाता है ? इस संदर्भ में प्रभा खेतान कहती है 'यह दुनिया पुरुषों ने बनाई है परंतु महिलाओं कों पूछकर नहीं'-4

महिलाएँ सदियों से अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। सदियों से चली आ रही परंपराओं और संस्कारों नाम पर महिलाएँ खुद ठोकरे खाती हुई आज भी अपनी पहचान के लिए लड़ रही है। इतिहास का हर पन्ना गवाह है कि त्याग और बलिदान मूर्ति को कदम-कदम पर अपने ही अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। और आज तक उनका संघर्ष जारी है। ईश्वर कि बनाई इस दुनिया में रहने वाले लोग शायद यह भूल गए है कि जिसकी वजह से ओ इस धरती पर साँस ले रहे है। स्त्री के बारे ज्योतिबा फुले ने कहा है--

'सभी प्राणीयों मे मनुष्य श्रेष्ठ है

और सभी मनुष्य में नारी श्रेष्ठ है
स्त्री और पुरुष जन्म से ही स्वतंत्र है
इसीलिए दोनों को अधिकार समान
रूप से भोगने का अवसर मिलना चाहिए'-5
----महात्मा ज्योतिबा फुले

संसार के समस्त प्राणीयों में मानव को श्रेष्ठ प्राणी माना जाता है।मानव जगत में नर को पुरुष और मादा को नारी के रूप में जाना जाता है। यह समाज स्त्री और पुरुष मिलने से ही बना है।इस कारण से दुनिया कोई भी समाज एवं देश में स्त्री –पुरुष के समान भागीदारी होना जरूरी है।।परंतु ख़ासतौर पर भारत में सदियों से स्त्री के साथ अन्याय होता आया है।स्त्री अपने के हो रहे अन्याय .निंदा.अत्याचार. पीड़ा को कुछ हद तक सहन किया है।पुरुष प्रधान समाज ने एक शडयंत्र के जरिए स्त्री को कमजोर बनाकर अपने कब्जे में रखने का प्रयास किया है।

हमारा संविधान और कानून ने महिलाओं कों ताकत दिया है।फिर भी पुरुषों की परंपरागत पुरानी मानसिकता उन्हे मौका देने नहीं छोड़ता है।पुरुष जानबूझकर महिला कों महिला ही रखना चाहता है। लोगों को उस सोच से बाहर आकार महिलाओं के सुविधा प्रदान करना चाहिए है।आज महिला अपने वर्चस्व की लड़ाई लड़ रही है।उन्हे इस प्रतियोगिता के युग में अपनी पहचान बनानी है।वह पुरुषों से शाररिक स्तर पर और बौद्दिक स्तर पर भी लड़ रही है।

सन 1975 के बाद भारतीय स्त्रियों कि स्तिथी में परिवर्तन हुआ है। यह वर्ष महिलाओं के लिए स्वर्णिम साल रहा है। महिला संबंधित पूरे विश्व भर में कई कार्यक्रम चलाए गए थे। महिलाओं एक तरह से ताकत देने के का काम सयुंक्त राष्ट्र संघ ने किया है। अंतराष्ट्रीय महिला वर्ष कि घोषणा के संदर्भ में मीडिया द्वारा स्त्री समस्या उठाया जाना महानगोरों में स्त्रि सुधार संबंधित विषयों पर ज़ोर दिया गया है। नारिवाद पर सुभास सेतिया कहती है 'बदलाव का यह काफिला पुरुषों से टकराव या द्वन्द्व के रास्ते से नहीं बल्कि.सहयोग और उच्चसोच के रास्ते से होकर गुजारेगा। कियों कि पुरुषों कि द्रष्टिकोण में परिवर्तन लाए बिना समानता कि मंजिल तक पंहुचना कठीन होगा।

स्त्री समाज के हर क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है।दुनिया के कोई भी विकसित देश का चरित्र उठाकर देख लीजिए जिस समाज में स्त्री को आगे बढ़ने का मौका दिया जाता है वह समाज काफी विकास हुआ है।जिस देश की महिलाएँ अशिक्षित है वह देश विकास के रफ्तार में भी पीछे पड़ गया है। इसी कारण महिलाओं आगे बढ़ने के अवकाश देने चाहिए।स्त्री-पुरुष जब समान होंगे देश के विकास में भी उन दोनों का समान योगदान रहेगा।हमे एक सुंदर एवं शश्क्त समाज निर्माण करना है।लिंगानुपात कम करना है।बलात्कार के मामले जो आज विश्व भर में भारत को लेकर गलत सोच बनी है हमे उसे ठीक करना है।

हम आज 21 वी सदी में जी रहे है । जो तकनीक युग है। जो भी इनसान स्त्री के साथ गलत व्यवहार करता है उन्हे जरूर दंड मिलना चाहिए है। कानून का सख्त पालन होना चाहिए। स्त्री को आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी होना चाहिए। वह अपने मौके कों खुद तलाश रही है।वह पति के साथ साथी बनकर रहना चाहती है पत्नी बनकर नहीं।पत्नी बनने मे उन्हे गुलामी का अनुभव होता है। इस विषय में पुरुष कहता है यह नारिवाद है एक तरह से पुरुष के साथ विद्रोह हो जाता है। जो भी हो हमे एक समान बिना भेदभाव का समाज का निर्माण करना है। यह तभी संभव होगा पहले महिलाओं कों देखने की नजरियां बदल ना चाहिए। उसके रीति-रिवाज कों बदलना है। महिलाओं को अपने अधिकार की ज्ञान होना चाहिए। भारत मे स्वतंत्र के बाद महिलाएँ के विकास हेतु सरकार की तरफ कई कार्यक्रम चलाए गए है। आज समाज के हर क्षेत्र में उनका योगदान है। इतना ही और आगे काफी विकास होना है। स्त्री संबंधित विषयों मे प्रतिभा सरोज ने कहा है स्त्री साहित्य ने स्त्री कों वस्तु से व्यक्ति बनाया है।वह साहित्य हमारे लिए प्रेरणादायक ।है। पुरुष समाज को भी यह सोचना है की हमे महिलाओं देवता के रूप में पूजने से उनका भविष्य नहीं बनेगा बल्कि मानवीयता के द्रष्टि से देखकर कंधेसे कंधा मिलाकर चलने से और उन्हे सहयोग देने से ही स्त्रि का उज्वल भविष्य बनेगा।

निष्कर्ष-स्त्री विमर्श संबंधित हम यह कह सकते है कि 21 वी सदी के साहित्य में भारतीय समाज में स्त्रियों के साथ होने वाली अत्याचार एवं शोषण का यथार्थ चित्रण किया गया है । ईश्वर कि द्रष्टि में नर और नारी समान है।दोनों एक दूसरों के पूरक है। जीवन में दोनों कि भूमिका महत्वपूर्ण है।फिर भी समाज में नारी को संदेहात्मक रूप से देखा जाता है।भारतीय समाज में महिलाओ को किस प्रकार का मानसिक तनाव.प्रताड़ना सहना पड़ रही है। सदियों से स्त्री पर पुरुष का वर्चस्व रहा है और आज भी है।महिलाएँ वर्तमान समय में आत्मनिर्भर बन रही है।इसीलिए कह सकते है कि समकालीन स्त्री जीवन के यथार्थ रूप को महिला साहित्यकारों ने अपने साहित्य के जरिए स्त्री सुधार पर ज़ोर दिया है।स्त्री को भी समाज कि मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1) भारतीय समाजशास्त्र - शंकरराव प्र.स. 37
2) चित्रा म्रदुगल की कविता संग्रह प्र.स. 139
3) महात्मा गांधीजी और स्त्रि शिक्षण- प्र.स .57
4) प्रभा खेतान काव्य संग्रह प्र.स. 13
5) महात्मा ज्योतिबा फुले जीवन चरित्र. प्र.स .73

****